बर्फ का रहवासी हिम तेंदुआ

प्रमोद भार्गव

नई-नई निगरानी तकनीकों के वजूद में आ जाने से भारत की बर्फीली वादियों में हिम तेंदुए की उपस्थिति की जानकारी लगातार मिल रही है। हाल ही में उत्तराखण्ड के गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान में कैमरा-ट्रैप पद्धति से हिम तेंदुए की बड़ी संख्या में तस्वीरें ली गई हैं। इसके पहले इस दुर्लभ प्राणी के चित्र उत्तराखण्ड के ही बर्फीले मलारी क्षेत्र में इसी पद्धति से उतारे गए थे। कैमरा-ट्रैप पद्धति दुर्गम इलाकों में वन्य जीवों की गणना करने में अपनाई जाती है।

भारत में वन्य जीवों के छायाकार राजेश बेदी करीब दो दशक पहले हिमालय की गोद में डेरा डालकर हिम तेंदुए पर पूरी एक फिल्म बना चुके हैं। भारतीय वन्य जीव संस्थान इस तकनीक का इस्तेमाल इनके संरक्षण के लिए कर तो रहा है, लेकिन वन्य जीव वैज्ञानिक और अधिकारी वाहवाही लूटने के लिए उनकी मौजदूगी के स्थलों को जिस तरह से प्रचारित करने में लगे हैं, उससे हिम तेंदुओं का अस्तित्व खतरे में भी पड़ सकता है क्योंकि जानकारी मिलने से शिकारियों को उनके आवासीय क्षेत्र तलाशने में आसानी होगी। इस लिहाज़ से इनके आवास, आहार व प्रजनन क्षेत्रों को गोपनीय बनाए रखने की ज़रूरत है।

हिम तेंदुए को हिम बाघ भी कहा जाता है। अंग्रेज़ी में इसे स्नो लेपर्ड कहते हैं। बिल्ली प्रजाति का यह प्राणी बेहद दुर्लभ, शर्मिला और अक्सर मनुष्य की आंखों से ओझल रहने वाला प्राणी है। यह हिमालय की समुद्र तल से तीन हज़ार से साढ़े तीन हज़ार मीटर तक की ऊंचाई पर बर्फीली कंदराओं में रहता है। इन शिखरों पर मनुष्य की आवाजाही कम से कम है। हिम तेंदुओं को कैमरों में कैद करने का सिलसिला जब से शुरू हुआ है, तब से इनकी मौजदूगी की जानकारी नए-नए हिमालयी क्षेत्रों में मिलना शुरू हो गई है। इन जानकारियों के मुताबिक उत्तराखंड में नंदा देवी, गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान और बायोस्फीयर संरक्षित वनों में हिम तेंदुए हैं। सिक्किम में कंचनजंघा एवं बायोस्फीयर वन, हिमाचल प्रदेश के स्फीति क्षेत्र, जम्मू-कश्मीर के लद्दाख व कारगिल क्षेत्र में तो ये पाए ही जाते हैं। अरुणाचल प्रदेश में इनके सरंक्षण के लिए बाघ परियोजना की तर्ज़ पर 'हिम तेंदुआ परियोजना' शुरू की गई है।

हिम तेंदुओं की घटती संख्या को ध्यान में रखते हुए युद्ध स्तर पर इनके संरक्षण के उपाय 2006 से आरंभ हुए हैं। लद्दाख में ये उपाय विश्व प्रकृति निधि के आर्थिक सहयोग से चल रहे हैं, जबकि सिक्किम में पूरा खर्च राज्य सरकार उठा रही है। उत्तराखण्ड में यही काम वहां का वन विभाग कर रहा है, जबकि हिमाचल प्रदेश में इनके संरक्षण का दायित्व नेचर कंज़रवेशन फाउंडेशन संभाल रहा है।

वैसे दुनिया के अन्य देशों में हिम बाघ की मौजदूगी रूस से लेकर चीन और मंगोलिया तक है। हिमालय पर तो यह हिंदुकुश के ऊंचे शिखरों से लेकर सिक्किम तक पाया गया है। इसके आलावा नेपाल और भूटान की पहाड़ियों पर भी इसकी आमद दर्ज की गई है। अलबत्ता, इनकी संख्या निश्चित नहीं है। भारत में ज़रूर ये गिनती में 500 के आसपास हैं।

हिमालय के मूल बाशिंदे गडरिए हिम तेंदुआ को थारूवा नाम से पुकारते हैं। सामान्य तेंदुए की तुलना में यह थोड़ा छोटा होता है, लेकिन इसकी पूंछ लंबी होती है। पूंछ की लंबाई 90 सेंटीमीटर तक होती है। इसका वज़न 65 से 70 किलोग्राम तक होता है। इसका रंग हल्का पीलापन लिए हुए सफेद होता है जिस पर काले धब्बे होते हैं। इसकी खाल बेहद चमकीली और मखमली होती है। हिम तेंदुए के पैरों के तलुओं में रोएं होते हैं, जो इसे बर्फीली ठंड से बचाते

हैं। यह सामान्य तेंदुए की तरह बेहद फुर्तीला और चालाक प्राणी है। अपने सफेद रंग के कारण यह बर्फ से ढंकी चट्टानों के बीच खड़ा हो तो आसानी से नज़र नहीं आता। इसलिए यह आसानी से शिकार कर पाता है। हिम तेंदुए अकेले रहने के आदि हैं। इनकी आंखें अंधेरे में भी देखने में सक्षम होती हैं। इनका प्रिय भोजन पहाड़ी भेड़, बकरी, हिरण, खरगोश, लोमड़ी और सियार होते हैं। यह दस मीटर से भी ज़्यादा लंबी छलांग लगाने में माहिर होने के कारण शिकार को आसानी से दबोच लेता है।

हिम तेंदुओं के प्रजनन के बारे में वैज्ञानिकों को बहुत ज़्यादा सटीक जानकारी नहीं है क्योंकि बर्फीले दुर्लभ क्षेत्रों में इस पर शोध करना मुश्किल काम है।

ठंडे हिम खण्डों में रहने के कारण ये कम ही दिखाई देते हैं। जब बड़ी मात्रा में बर्फबारी होती है और इन्हें भोजन संकट का सामना करने की नौबत आ जाती है तो ये निचले इलाकों में चले आते हैं। इसी समय शिकारी इन्हें मारने को चौकन्ने हो जाते हैं। इनका शिकार खाल, नाखून और हड्डियों के लिए किया जाता है। इनकी हड्डियों के चूरे का इस्तेमाल चीन में दवाएं व महंगी शराब बनाने के लिए होता है। इनके अवशेषों की सबसे ज़्यादा कीमत चीन में ही मिलती है। कभी-कभी गडरिए भेड़-बकरियों की सुरक्षा के लिए हिम तेंदुओं को मार डालते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***